नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : ....   दिनांक : 01.02.2019

प्रकाशनार्थ

अब समय आ गया है कि विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं शोध संस्थानों की प्रयोगशालाओं में हा रहे शोध क्रमशः नीचे की ओर और अन्ततः जनता तक पहूँचे। विज्ञान को लोक–कल्याण मुखी होना होगा। दुनिया में विज्ञान में युगानुकूल चुनौतियों को ध्यान में रखकर अनेक जीवन प्रवृत्तियाँ विकसित हो रही हैं। तेजी से बदलते युग के और विज्ञान की शोधों में हो रहे परिवर्तन की गति मे समन्वय साधना एक बड़ी चुनौती है। विज्ञान इस दृष्टि से कार्य कर रहा है। उक्त बाते महाराणा प्रताप पी0जी0 कॉलेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर में 'विज्ञान मे नवीन प्रवृत्तियाँ' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि भारत सरकार के बायोटेक्नोलॉजी विभाग के पूर्व सलाहकार डॉ0 ए0 निनावे ने कही।

अध्यक्षता करते हुए मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 श्रीनिवास सिंह ने कहा कि राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ, व्याख्यान, कार्यशाला के माध्यम से हम विज्ञान में दिन–प्रतिदिन उत्पन्न हो रही नवीन प्रवृत्तियों को एक दूसरे से साझा करते हुए विज्ञान को निरन्तर नया आयाम देते रह सकते हैं। वर्तमान युग विज्ञान का युग है। 21वीं शताब्दी असीमित वैज्ञानिक उपलब्धियों का युग बनने जा रहा है। भारत की युवा शक्ति ज्ञान–विज्ञान के इस अभियान का सहभागी भी बने, साक्षी भी बनें।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राणि विज्ञान विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो0 डी0के0 सिंह ने कहा कि 1961 ई0 तक मनुष्य ने विश्व में उपलब्ध वैश्विक संसाधनो का 70 प्रतिशत हिस्सा उपभोग कर चुका था। 1999 ई0 तक हम उपलब्ध संसाधनों का 12 प्रतिशत तक प्रयोग करने लगे थे। आज संसाधनों के पुनरूत्पादन की गति से अधिक तेजी से हम उपयोग कर रहे हैं। परिणामतः पर्यावरण संकट आज सबसे बड़ी चुनौती बना है। इक्कीसवी सदी के समक्ष उत्पन्न तीन मुख्य परिवर्तनों पर विज्ञान अपनी दिशा तय कर रहा है– जनसंख्या वृद्वि, औद्योगिक क्रान्ति और पर्यावरण बदलाव।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में पूर्व कुलपति प्रो0 यू0पी0 सिंह ने कहा कि विज्ञान के दो पक्ष हैं। एक आधारभूत सिद्धान्त और दूसरा युगानुकूल आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नवीन शोध नवीन शोध अर्थात् नयी प्रवृत्तियाँ युग निर्धारित करता है। शोध वैज्ञानिक दुनिया के प्राणि–जाति के कल्याण हेतु कार्य करें यही अपेक्षा है।

प्रस्ताविकी रखते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य एवं आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ0 प्रदीप राव ने कहा कि विज्ञान के क्षेत्र में तत्पश्चात भारत सहित दुनिया के वैज्ञानिक–तपस्वी विज्ञान द्वारा उत्पन्न की गयी आकांक्षा एवं महत्त्वाकांक्षा को पूर्ण करने का मार्ग भी प्रशस्त करें। दुनिया को विकास का वह माडल दें जो मानव को सुख–शान्ति और आनन्द दे सके।

इस अवसर पर रसायन विज्ञान के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 हरिजी सिंह, रसायन विज्ञान के अध्यक्ष प्रो0 ओ0पी0 पाण्डेय, भौतिकी के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 सुग्रीव नाथ तिवारी, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो0 शीला मिश्रा, भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ के प्रो0 कमान सिंह ने भी अपने–अपने शोध–पत्र प्रस्तुत किए। संचालन दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, वनस्पति विज्ञान विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ0 के0 सुनीता ने किया। सरस्वती वन्दना, कुलगीत एवं वन्दे मातरम् महाविद्यालय की छात्राओं ने प्रस्तुत किए।

नैक द्वारा 'बी' ग्रेड प्रत्यायित

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

मो. : 7897475917, 9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

(2)

राष्ट्रीय संगोष्ठी के महत्त्वपूर्ण अंश–

1. 21वीं शताब्दी विज्ञान की शताब्दी है।
2. विज्ञान ने अकल्पनीय ऊँचाई प्राप्त की है।
3. विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय समय की माँग है।
4. वैज्ञानिक अविष्कारों के बाइ–प्रोडक्ट की समस्या का समाधान जरूरी।

विज्ञान की चुनौतियाँ–

1. पृथ्वी पर हो रहे पर्यावरणीय बदलाव से जीवन के अस्तित्त्व पर प्रश्न खड़ा हो गया है।
2. पर्यावरणीय परिवर्तन 21वीं शताब्दी की सबसे बड़ी चुनौती।
3. जनसंख्या वृद्धि, गरीबी उन्मूलन, जैव–विविधता, कार्बन रहित ऊर्जा, खेती के लिए पानी, सामान्य जन का स्वास्थ्य विज्ञान की प्राथिमकता बने।

विज्ञान की नवींन प्रवृत्तियाँ–

1. पर्यावरणीय बदलाव के अनुकूल प्रौद्योगिकी के विकास पर कार्य जारी है।
2. बायोमेडिकल सांइस में प्रतिरोधक वैक्ट्रिया के विरूद्ध माइक्रोलीड्स द्वारा नयी एण्टीवायटिक्स का निर्माण।
3. माइक्रोरोबोट द्वारा चिकित्सकीय कार्य।
4. एण्टीवायरस दवाओं का निर्माण एवं नैनो मेडिसिन की खोज।
5. स्टेम–सेल टेक्नालाजी का विकास।
6. क्वान्टम सेटेलाइट एवं क्वाण्टम कम्प्यूटरिंग।
7. गरीबी उन्मूलन हेतु साफ्टवेयर पर कार्य जारी है।
8. नैनोपोरस फायविड्स द्वारा एअर कण्डीशनर वस्त्रों का निर्माण।
9. साइट–रिजिंग साफ्टवेयर।
10. एण्डवान्स मैटेरियल एवं मेनुफैक्चरिंग।
11. कार्बन रहित ऊर्जा का उत्पादन।
12. सौर्य ऊर्जा एवं सोलर फ्यूल।
13. न्यूक्लियर फ्यूजन टेक्नालाजी।
14. भोजन–जल संरक्षित प्रौद्योगिकी का विकास।
15. प्रयोगशालाओं में मीट (मांसहारी भोजन) का निर्माण।
16. अन्तरिक्ष प्रौद्योगिकी।

.

(राजेश शुक्ला)

सूचना एवं जनसम्पर्क अधिकारी